Code no : 16

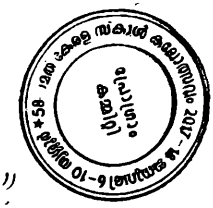

58 ★ ... 2017 ...

"सबके साथ सबका विकास"

'चार्लस डारविन', सब इस व्यक्ति को जानते है। अपने 'ओरिजिन ऑफ स्पीशीस' प्रबंध से मशहूर हो गये थे वो। उनकी अनुसार बन्दर से परिणाम होकर हुआ था मानव। आधुनिक मनुष्य को ही हम 'होमो सापियनस' कहते है। शिलायुग के प्राचीन मनुष्य से इस इक्कीसवीं सदि का मनुष्य तक का परिणाम बहुत लंबा था। बन्दर से इनसान तक की यात्रा। आज का मानव विकसित है। शारीरिक, मानसिक, सामूहिक और बैद्धिक ~~सबी~~ सभी दृष्टिकोन से देखें तो हम ये ज़रूर कह सकते है कि मानव विकास प्राप्त कर रहा है। सबका विकास होना ज़रूरी है। लेकिन इस विकास की यात्रा हद से पार भी नहीं होना चाहिए।

अकेले और साथ। दोनों शबधों में ~~भ~~ फर्क है। अगर हम अकेले सबकुछ करें, तो सिर्फ अपना ही विकास होता है। तो फिर सिर्फ खुद केलिए सबकुछ करेंगे और वो भी दूसरों की परवाह करने बिना। और वो स्वार्थता बन सकता है। अगर

हम सब केलिए साथ मिलकर करें तो सबका ~~विश्वास~~ विकास होगा और वो होगी समाज सेवा। हमेशा हमें सिर्फ खुद के बारे में नहीं दूसरे के बारे में भी सोचना होगा। मोहनदास करंचंद्र गाँधी जैसे महान व्यक्ति अगर सिर्फ खुद के बारे में सोचते होते, तो भारत जैसे देश आसाद होने केलिए और समय लग जाते। इसलिए हमें सबके साथ, सबका विकास का योजना बनाना होगा। जैसे हमारे प्रिय बापूजी और नेताजी ने किया था।

हमारी धरती आज विकास की पथ में है। अगर कोई पूछें, कि धरती पूरी तरह से विकसित है क्या ?, इसके जवाब 'ना' ही मिलेगा। क्योंकि हमारी धरती में पूरी से हल होने केलिए और सारा समस्यायें भी है। आतंगवाद, बाल मजदूरी, नारी के विरुध होने वाले अत्याचार, कन्या भ्रूण हत्या ऐसे कई सारे समस्यायें आज भी हमारे दुनिया में है।

किसी भी क्षेत्र में बच्चों द्वारा अपने बचपन में की गयी सेवा को बाल मजदूरी कहते है। बचपन सभी के जीवन में विशेष और ~~सबके~~ सबसे खूबसूरत पल होता है

Code no: 16

जिसमें बच्चे अपने माता-पिता, ~~प्रकृत~~ प्रकृति ओर प्रियजनों से जीवन जीने की तरीक्का सीखते हैं। सामाजिक, शारीरिक, मानसिक ओर बैद्धिक सभी दृष्टिकोन से बाल मजदूरी बच्चों की वृद्धी ओर विकास में अवरोध का काम करता है। पढ़ने बाल मजदूरी से बच्चों को स्कूल जाने की क्षमता को बाधित करते हैं ओर बच्चे नुकसानदायक ओर खतरनाक नागरिक बन जाता है। बालमजदूरी सिर्फ बच्चों की ही नहीं, देश का भी विकास में बाधा बन जाता है। भूलना मत कि आजके बच्चे ही कल के नागरिक है। दुनिया के सभी बच्चों की विकास से दुनिया की विकास होता है। इसलिए बाल मजदूरी जो उनकी विकास में अवरोध का काम करता है, उसे रोखना चाहिए। इसकेलिए नियम-कानून को बढ़ाकर इस गैरकानूनी, ओर अधार्मिक अत्याचार को रोखना चाहिए।

महिला सशक्तिकरण आज एक चर्चित विषय है। नारी सशक्तिकरण के बारे में जानने से पहले हमें ये जानना होगा कि सशक्तिकरण का क्या मतलब है? सशक्तिकरण व्यक्ति की उस क्षमता से

है, जिससे वो ~~ज~~ शक्तिशाली बने ओर अपने जीवन से जुड़े सभी निर्णय खुद ले सके। महिला सशक्तिकरण का मतलब है कि नारी शक्तिशाली ~~बान~~ बने, ताकि वो परिवार ओर समाज की बंधन से मुक्त होकर अपने जीवन की निर्णयों का निर्माता खुद बने। मार्च 8 को हम अंतराष्ट्रीय महिला दिवस मनाते है; क्यो? हमारे प्रधानमंत्री ~~न~~ श्री नरेंद्र मोदी जी ने इस सवाल का उत्तर दिया है। "देश की तरक्की केलिए महिलावों को आगे बढ़ना होगा"। हाँ। जब एक महिला अपनी कदम उठा ~~लि~~ लेती है, तो ~~¢~~ परिवार आगे बढ़ता है, गाँव आगे बढ़ता है ओर देश विकास की ओर बढ़ता है। महिलयाँ शक्तिशाली बनने से देश ओर दुनिया विकसित हो सकते है। इस केलिए मर्दो ~~की~~ के सोच को भी विकास होना चाहिए। जो लड़की किसी घर की लक्ष्मी बन सकते है, वो राष्ट्र ओर दुनिया केलिए 'महालक्ष्मि' भी बन सकते है। इसलिए ही तो राजा राम मोहन रॉय, ज्योतिराव ~~भु~~ फुले, ~~सावित~~ सावित्रि भाई फुले, स्वामी विवेकानंद, आचार्य विनोभा भावे जैसे लोग नारी की उन्नमन केलिए परिश्रम किया। आज ~~अ~~ के महिलायें कन्या भ्रूण हत्या, असमानता, अत्याचार,

+58-Ja

ऐसे कई सारे समस्यावों का सामना करता है। उन्हें शिक्षा देकर उड़ने केलिए पंख भी दें, तो वो कितनी ऊँचाईयाँ पार करेंगी इसका कोई अंदाज़ा भी नहीं लगा सकते। इसलिए ही तो बोलते हैं 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ'। मलाला यूसफसाई जैसे अपने हिम्मत से मशहूर होनी होने वाली लड़की को हम नहीं भूल सकते। सबका विकास होना चाहिए। इसमें महिलायें भी शामिल हैं, भूलो मत।

विकास शब्ध सुनकर हमारे मन में पहले नई इमारतें, ~~बनाना~~ मदर्से, स्कूल, आस्पताल, आदि बनाना, ये सब ख्याल आते हैं। ये भी विकास के भाग है। आज का जो युग है वो विज्ञान विस्फोटन का युग। दुनिया के कोने-कोने में क्या हो रहा है, वो हम घर बैठे ही पता चला सकती हैं। एफ.बि, वाडस ऑप, ट्विटर सब कुछ इस विस्फोटन का भाग है। लेकिन आज भी हमारे दुनिया में कई सारे ऐसे लोग ~~से~~ है, जो इस विकास के पथ से, विज्ञान की सुख-सुविधायें आदि से वंचित है। और वो भी गरीबी, भूख, निरक्षरता आदि के वजह से। इस इक्कीसवीं सदि "सोफि" जैसे अत्याधुनिक रोबोट

के युग है। यहाँ पर कुछ भी नामु ~~नामु~~ नामुनकिन नहीं है। हमें सिर्फ कोशिश करना चाहिए, ~~क~~ इन हालातों को बदलने केलिए दिल से कोशिश करने की जरूरत है। विज्ञान की सुविधावों की मदद से दुनिया से गरीबी, भूख ओर अशिक्षा को मिटाना चाहिए। नेपोलियन ने ठीक ही कहा है ; कुछ भी नामुनकिन नहीं है "

जैसे कि हम आज विकास की यात्रा में है। लेकिन इस विकास के नाम ~~को~~ लेकर हम जो अत्याचार पर्यावरण के साथ कर रहा है, ~~असका~~ उसका सीधा असर हम पर, यानी इस ~~वि~~ दुनिया पर पड़ने वाले है। क्योंकि जब विकास केलिए धरती ही ~~व~~ नहीं बचा, तो फिर कैसे होगा 'विकास!' इस प्रकृति ओर पर्यावरण हमारे जीवन का निधान है। वो हमारी माँ है। माँ सब कुछ सहती है। लेकिन सहने की हद बेहद हो जाति है तो वो माँ अपनी बच्चों से प्रतिशोध करने लगेंगे, ओर प्रकृतिक आपदायें होगी ओर कई सारे मासूम लोगों को अपनी जान खोने पड़ेंगी। ~~'ओख~~ 'ओखी' नामक तूफान को केरल की जनता बहुत जल्दी नहीं भुला सकती। इसलिए ऐसे विकसन करो,

जिससे प्रकृति को कोई आपदा ना आये।

विकास सिर्फ ओर सिर्फ ऐसी नहीं होनी चाहिए। मन को भी विकास की जरूरत है। इस इक्कीसवीं सदि में इनसान की सोच का विकास होना भी जरूरी होगी। दुनिया में होने वाली कई घटनाएँ इसकी जरूरत दिखाती हैं।

इनसान ने पहली बार 1969 जुलाई 21 को इनसान ने पहली बार चाँद पर पैर रखा। उस इनसान नील आमस्ट्रोंग ने ठीक ही कहा था, 'मेरे लिये एक छोटे कदम, पूरी इनसानियत ओर मनुष्य वर्ग केलिए एक बहुत बड़ा कदम"। इनसान कई बार चाँद पर उतरा, मंगल जैसे कई ~~गृह~~ ग्रहों में उपग्रह भेजा, फिर भी इनसान की अंतविश्वास कम नहीं हुआ। आज भी अंतविश्वास के कारण दुनिया में कई सारे अत्याचार होते रहते है। इस हालात को बदलना जरूरी है।

युद्ध। सुनते ही मन में विनाश का चित आता है। फिर भी दुनिया में लड़ाई-झगड़ा होते रहते है। युद्ध जो है वो विकास के विरुद्ध है इसलिए इसें हमें रोखना चाहिए।

'भारत' और 'पाकिस्थान', दोनों नाम सुनते ही मन में दुशमनी याद आती है। ये दोनों दो राष्ट्र हैं। दोनों में फर्क है। लेकिन कोनसी फर्क? क्या भारतीय का खून का रंग लाल और पाकिस्थानि का हरा है क्या? नहीं। दोनों ~~तरह~~ ~~तरफ~~ तरफ की हवायें एक है, पानी की किल्लत और जरूरतें मे एक हैं, दोनों तरफ की मिट्टि एक है, हवाएँ एक है। ~~सबकुछ~~ एक जैसा ही है, और अगर कोई ~~भ~~ भर्क है तो वो सिर्फ इनसान की सोच में! इसकेलिए हम क्या करें? जैसे हमारी दुनिया विकसित हो रहा है, वैसे इनसान की सोच को भी विकसित होना है। मजे के बात ये है कि ये जो फर्क है, वो सिर्फ ~~इनसान की सोच~~ इसी क्षेत्र में ही नहीं कई सारे क्षेत्रों में है यह फर्क।

अगर भेदभाव की बात करें, तो इस दुनिया में कई सारी तरह की भेदभावें है। लड़का-लड़की का, जाती - वर्ग - वर्ण - स्थान आदि का। लड़का - लड़की के बीच होने वाले फर्क के वजह कई सारे समस्यायें है। लिंग निर्णय से, अगर गर्भ में होने वाले बच्चा लड़की साबित हुई, तो फिर उसे गर्भ में ही मार डालेंगे। क्योंकि कुछ लोगों को

ऐसे लगता है कि वंश की आगमन लड़कों से होते है, यानी वारिस सिर्फ लड़का हो सकता है। वो लोग इस बात भूलते है कि बच्चा पैदा करने केलिए लड़कियाँ ही चाहिए।

जाति प्रथा की कारण आज भी दुनिया में बहुत सारे हत्यायें होते रहते है। वो भी भेदभाव ही है ना? इस ~~भेदभाव~~ भेदभाव की वजह से इनसान भूल जाते है कि, वो एक हिंदु या मुसलमान, पंजाबी या मराठी ब्रह्मण या शूद्र ~~बनने~~ भारतीय या पाकिस्थानी बनने के पहले होते है एक इनसान!' और इनसान वो होता है जिसके दिल में इनसानियत है यानी मानविक मूल्य है! इस भेदभाव की वजह से इनसान आज भी पूरी तरह से आज़ाद नहीं है। "इनसान जन्म होते वक्त आज़ाद है, लेकिन सभी जगहों में वो बाँधे होते है" - रूसो। और इनसान को बाँध कर रखने से राष्ट्र की वृद्धि और विकास में अवरोध आती है।

इनसान है तो विकास होना चाहिए। क्योंकि अगर बन्दर जैसे ही व्यवहार किये तो बन्दर बन सकते है। बन्दर से सभी को इनसान बनना है। इस केलिए ही

विकास की ज़रूरत है। कुछ नई शस्ता बनाने से या कुछ अधिक घर ओर इमारतें बनाने से इनसान विकास नहीं होता। विकास सामाजिक, शारीरिक, मानसिक ओर बौद्धिक है। सिर्फ शरीर से ही नहीं दिमाग ओर ~~मन~~ दिल से विकास होना है। सिर्फ एक आदमी विकसित होने से धरती का विकास नहीं होते, इनसान वंश का विकास नहीं होते। इसलिए सबके साथ विकास होना है। अच्छे नायक वो ही है जो सबको साथ लेकर चलता है। सबको मेहनत करने पड़ेंगे। मेहनत का फल मीठा ही होता है। "कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती"।

"भूलकर भेदभाव की बातें,
करें कुछ लगाव की बातें"

ये हमेशा याद रखना। "सबके हाथ में है सबका विकास।"